आधुनिक वैज्ञानिक हिंदी आलोचना परंपरा नामवर की देनः प्रो. भारती

हिंदी विश्वविद्यालय कोलकाता केंद्र में नामवर सिंह के आलोचना कर्म पर विशेष व्याख्यान आयोजित

हिंदीं साहित्य में इतिहास के साथ संतुलन बनाकर आधुनिक वैज्ञानिक परंपरा का निर्माण करने

का श्रेय डॉ नामवर सिंह को जाता है। वे इतिहास को विकृत कर पेश करने के विरोधी थे

जबकि यह चलन आज कुछ ज्यादा ही विद्यमान है। नामवर सिंह की आलोचनापद्धति मार्क्सवाद के साथ-साथ समाजवाद को लिए हुए है। नामवर सिंह के लिए विचारधारा को मानने का मतलब यह नहीं है कि उसके दलदल में फँस जाया जाए। नामवर ने लिखित आलोचना की

अपेक्षा मौखिक आलोचना की परंपरा को बल दिया- ये बातें वरिष्ठ आलोचक एवं काज़ी नज़रुल विश्वविद्यालय, आसनसोल के कला संकाय के अधिष्ठाता प्रो. विजय कुमार भारती ने कही। वे

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता द्वारा "हिंदी आलोचना और नामवर सिंह" विषय परआयोजित व्याख्यान में मुख्य वक्ता के तौर पर बोल रहे थे। उन्होंने आगे कहा कि नामवर जी की आलोचना का कैनवास बहुत बड़ा है। वे इतिहास और आलोचना को केंद्र में ले आते हैं और ऐतिहासिक दृष्टि के महत्व को स्थापित करते हैं। नामवर जी इतिहास के बहाने अतीत में नहीं जाते बल्कि इसे आधार बनाकर वर्तमान में भविष्य की

रूपरेखा के लिए रास्ता बनाते हैं। नामवर जितने बड़े आलोचक थे, उतने ही बड़े अध्यापक और वक्ता भी थे।वे अध्ययन ज्यादा करते थे और लिखते कम थे। आलोचना में नए प्रतिमान गढ़ने के कारण वे विवादों में भी घिरे। वे अकेले व्यक्ति थे, जिन्होंने रामविलास शर्मा को चुनौती दी। 'दूसरी परंपरा की खोज'का जिक्र करते हुए प्रो. भारती ने कहा कि इस पुस्तक को अपने गुरु डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी को समर्पित करके नामवर जी ने गुरुभक्ति का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया। प्रो भारती ने कहा कि नामवर जी ने अंबेडकर और लोहिया पर कुछ नहीं लिखा,यह थोड़ा खटकता है। दलित और स्त्री विमर्श को लेकर उनकी उदासीनता और समझ भी उन्हें कटघरे में खड़ा करती है और उनके सामंती सोच को दिखाती है।

अपने वक्तव्य के समापन के बाद प्रो विजय कुमार भारती ने उपस्थित श्रोताओं के प्रश्नों का जबाब भी दिया। इस कार्यक्रम में केंद्र एवं दूसरे कॉलेज-विश्वविद्यालय के विद्यार्थी-शोधार्थी एवं प्राध्यापक मौजूद थे। इसका संचालन महाराजा श्रीशचंद्र कॉलेज के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ कार्तिक चौधरी ने किया। स्वागत भाषण एवं धन्यवाद ज्ञापन केंद्र के प्रभारी डॉ. सुनील कुमार 'सुमन' ने किया।